साहित्य 24

मासिक हिंदी E - पत्रिका

साहित्य संसार

साहित्य, कला और संस्कृति को समर्पित एक अभियान

संजो रानी "संजना"

Yuva Infra™

Smart Property Deals

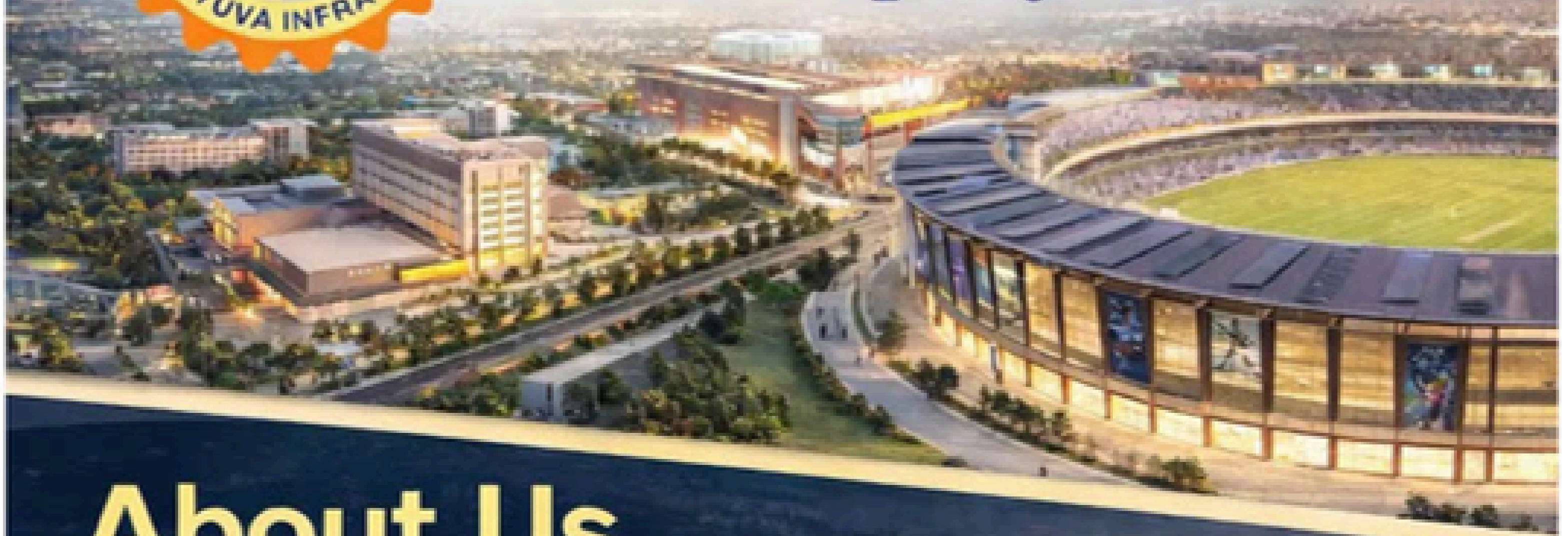

About Us

Your Trusted Partner in Delhi NCR Real Estate

- Residential
- Commercial
- Investment Properties

Yuva Infra is a trusted **real estate agency** dedicated to providing smart and reliable property solutions. We specialize in helping clients find the best residential, commercial, and investment properties in Delhi and NCR.

- Reliable Property Solutions
- High ROI Property Investments
- Assured Rental Income
- Verified & Transparent Deals
- Customer-Focused Service

Find Your Dream Property

Contact Us Today!

+91 8929486888

WhatsApp: +91 8929486888

info@yuvainfra.org

पूजनीय मेरे दादा जी बहुत आदर्शवादी ,
कर्मठ, अनुशासन प्रिय और साहित्य प्रेमी थे।

पूज्यनीय मेरी दादी जी बहुत धार्मिक,
विनम्रशील और साहित्यिक प्रवृत्ति की थीं ।

पूजनीय मेरे मां और पिताजी
मेरे प्रेरणा स्त्रोत, मार्गदर्शक और मेरे प्रथम गुरु ।

पूजनीय श्री इन्द्र सिंह जी और श्रीमती पूनम रानी जी ।
माता पिता के समान मेरे सास और ससुर जी आप
दोनों का स्थान मेरे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है ।
आपका स्नेह, मार्गदर्शन और आशीर्वाद सदैव मुझे
आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

कवयित्री की कलम से “मन के भाव”

मेरी रचनाएं मेरे भावों का अथाह सागर है। मन में उठने वाले द्वंद्व वेगों की एक जलधारा है । मैं संजो रानी संस्कृत की शिक्षिका भी हूं ‘संजना’ मेरा उपनाम है।मैंने जीवन में आये अच्छे और बुरे अनुभवों को, देश और समाज की परिस्थितियों को आधार बनाकर ही अपनी कविताएं लिखीं हैं।

किसी ने मुझसे पूछा आप कविताएं क्यूं लिखती हो ? मैंने कहा कविताएं लिखना मेरी रुचि है और मैं अपनी रचनाओं के माध्यम से मृत्यु के बाद भी इस संसार में जीवित रहना चाहती हूं लोग मेरे जाने के बाद भी मेरी रचनाएं पढ़ेंगे मुझे जानेंगे। मेरी कविताएं पाठकों की प्रेरणा स्त्रोत बनेंगी यही मेरी कविताओं का उद्देश्य है।

अभी तक मैंने बहुत से रचनाकारों का जीवन परिचय पढ़ा था। विद्यालय और महाविद्यालय में प्रसिद्ध कवियों, कवयित्रियों और लेखकों का जीवन परिचय याद भी किया था पर कभी सोचा नहीं था कि किसी पत्रिका में मेरे भी जीवन का परिचय छपेगा । मेरा सौभाग्य है साहित्य 24 के संस्थापक और वरिष्ठ साहित्यकारों ने मेरी प्रतिभा को पहचाना मेरी रचनाओं को सुना उन्हें सराहा और अपनी मासिक पत्रिका “साहित्य संसार” में मेरे जीवन का परिचय साक्षात्कार शैली में वर्णित किया और मेरी कविताओं को सम्मिलित किया। मैं हृदय से साहित्य 24 के संस्थापक श्री हरिप्रकाश पाण्डेय जी , संयोजिका श्रीमती नीता त्रिपाठी जी का हार्दिक धन्यवाद करती हूँ।

(संजो रानी “संजना”)

sahitya 24

साहित्य 24

प्रकाशन

पुस्तक प्रकाशन के लिए संपर्क करें..

9315701112

saahitya24@gmail.com

संजो रानी "संजना"

*कवयित्री संजो रानी "संजना" जी का जीवन परि ति ।

- **नाम –** संजो रानी
- **उपनाम –** संजना
- **व्यवसाय –** धनपतमल विरमानी सी.सै.विद्याल
- **जन्म भूमि – उत्तर प्रदेश**
- **शिक्षा –** दिल्ली में शालीमार बाग के सर्वोदय व
प्राप्त की ।
- **स्नातक और स्नातकोत्तर –** दिल्ली यूनिवर्सिटी व
संस्कृत विषय में स्नातक और स्नातकोत्तर की शिक्षा
- **बी. एड –** गुरु गोविन्द सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय
प्राप्त की।

- **पिताजी का नाम –** श्री नानकचन्द. पिताजी इंडियन ऑयल कारपोरेशन में उच्च पद से सेवानिवृत्त हो चुके हैं। पिताजी को बागवानी और साहित्य में विशेष रुचि है। पिताजी ने सदैव आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है।

- **माता जी का नाम–** श्रीमती मितलेश कुमारी। बहुत कर्मठ, विनम्रशील, धार्मिक प्रवृति, भजन कीर्तन में विशेष रुचि है ।
- **विवाह –** 2009 में श्री तरुण जी के साथ विवाह हुआ। साहित्य में आगे बढ़ने में पति श्री तरुण कुमार सिंह जी ने बहुत सहयोग किया। 26 जनवरी 2010 में पुत्री का जन्म हुआ जिनका नाम वंशिका सिंह है।

- **रुचि –** कविताएं लिखना और पठन पाठन ।
- **व्यवहार –** हंसमुख, मिलनसार, समस्त कार्यों के प्रति सजग ।
- **रचनाएं –** "भावों का संगम" जिसमें अलग अलग विधाओं पर कविताएं समाहित हैं।

- ब्रॉडकास्ट न्यूज मंत्रा में दो लेख **"संस्कृत भाषा का महत्व"** और **"भिक्षावृत्ति एक कलंक" प्रकाशित हो चुके हैं।**

- **साहित्य के प्रति रुझान –** बचपन से ही कविताएं पढ़ना और लिखना पसंद था मेरी दादी जी जिनका नाम रामादेवी है वे कविताएं और भजन लिखती थीं और गाती भी थीं मेरी दादी जी पूर्णतया धार्मिक प्रवृति की थीं ।मेरे दादा जी भी जिनका नाम शंकर लाल है वे भी साहित्य प्रेमी थे साहित्य के साथ साथ उन्हें पशु-पक्षियों से भी बहुत लगाव था तरह- तरह के पशु पक्षियों को पालते थे और उनकी अच्छे से देखभाल करते थे अपने दादा जी और दादी जी की साहित्यिक प्रवृति से प्रेरित होकर मैं भी कविताएं रचने लगी।

- **उपलब्धियां –**लक्ष्मीबाई कॉलेज में बहुत प्रतियोगिताओं में भाग लिया और प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।
- दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा समाराधक सम्मान से सम्मानित
- दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा संस्कृत सेवा पुरस्कार से सम्मानित ।
- संस्कृत शिक्षक संघ द्वारा संस्कृत शिक्षक रत्न से सम्मानित ।
- भारत विकास परिषद द्वारा सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित ।
- शिक्षक न्याय मंच द्वारा सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित ।
- हंसवाहिनी काव्य मंच द्वारा उत्तम काव्य पाठ के लिए सम्मानित ।
- साधना और सर्वधर्म संगम टीवी द्वारा सतमोला कवियों की चौपाल में उत्तम काव्य पाठ करने के लिए सम्मानित ।
- श्री वीरेन्द्र सिंह जी द्वारा आयोजित "बी दा किंग मेकर" द्वारा उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित।
- साहित्य 24 द्वारा उत्तम काव्य पाठ के लिए सम्मानित ।
- साहित्य 24 द्वारा शक्ति स्वरुपा सम्मान से सम्मानित।

परिचय एवं प्रारंभिक जीवन

प्रश्न 1– अपने बचपन और पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में बताइए
उत्तर:– मेरा जन्म बहुत ही साधारण और उच्च शिक्षित परिवार में हुआ मेरे पिताजी बहुत मेहनती और आई ओ सी में उच्च पद पर कार्यरत थे सेवानिवृत होने के बाद भी किसी न किसी कार्यों में संलग्न रहते हैं पिताजी को साहित्य और बागवानी में विशेष रुचि है । मेरी मां बहुत ही कुशल गृहणी हैं बहुत विनम्रशील और धार्मिक प्रवृति की हैं। भजन कीर्तन में विशेष रुचि है। मेरी एक बड़ी बहन जिनका नाम सीमा है सीमा जी एम सी डी के विद्यालय में शिक्षिका के पद पर कार्यरत हैं। मेरे दो छोटे भाई हैं जिनमें बड़ा भाई प्रवीन कुमार चौहान है प्रवीन कुमार चौहान जी बहुत ही कुशल इंजीनियर हैं। छोटा भाई नितिन कुमार चौहान हैं वे श्री अरविंदो महाविद्यालय में विभागाध्यक्ष हैं।

मेरे मां और पिताजी गांव से दिल्ली शहर में आए थे उनका जीवन संघर्षों से भरा था तब भी उन्होंने हम भाई बहनों को किसी भी चीज की कमी नहीं होने दी हमेशा उच्च शिक्षा पर बल दिया और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। मेरा स्वभाव बचपन से ही मिलन सार, नटखट और शरारती प्रवृत्ति का रहा है। 2009 में मेरा विवाह श्री तरुण जी से हुआ मेरे पति बहुत साधारण और विनम्र प्रवृति के हैं और हमेशा मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

प्रश्न 2– साहित्य के प्रति आपकी रुचि कैसे और कब जागृत हुई क्या आपके जीवन में कोई ऐसी प्रेरणादायक महिला रही हैं जिनका आपके व्यक्तित्व पर विशेष प्रभाव पड़ा है?
उत्तर:– मैं जब 10वी कक्षा में थी तभी से मुझे कविताएं पढ़ना और लिखना अच्छा लगता था । प्रकृति से मुझे बहुत लगाव है मेरे मुक्तक अधिकतर प्रकृति पर आधारित हैं। मेरे जीवन में प्रेरणादायक महिलाएं मेरी दादी जी और मेरी मां रही हैं। मेरी दादी जी भी साहित्यिक प्रवृति की थीं मेरी दादी रोज सुबह चार बजे ब्रह्ममुहुर्त में चक्की में गेहूं पीसते हुए स्वरचित भजन गाया करती थीं ।सुबह उनके भजनों को सुनकर सुबह और सुहानी हो जाती थी । मेरी मां भी दादी जी का भरपूर सहयोग किया करती थीं मेरी मां भी साहित्यिक प्रवृत्ति की हैं उन्हीं के सानिध्य में मेरा रुझान साहित्य की ओर हो गया।

साहित्यिक यात्रा

प्रश्न1– आपकी पहली रचना कब और कहां प्रकाशित हुई? उस अनुभव को कैसे याद करती हैं?
उत्तर:– मेरी पहली रचना 2019 मैं प्रकाशित हुई मेरी काव्यांजलि का नाम है "भावों का संगम" मेरी काव्यांजलि अक्षरशिल्पी द्वारा प्रकाशित हुई और सौभाग्यवश दिल्ली संस्कृत अकादमी के पूर्व सचिव डॉ जीतराम भट्ट जी द्वारा मेरी काव्यांजलि का विमोचन किया गया ये मेरा बहुत ही सुखद अनुभव था।

प्रश्न 2– अब तक आपकी प्रमुख कृतियां कौन कौन सी हैं?
उत्तर :– अब तक मेरी एक ही कृति प्रकाशित हुई है "भावों का संगम' दूसरी कृति जल्दी ही प्रकाशित हो जाएगी।

प्रश्न 3– आपकी रचनाओं में मुख्यत: कौन से विषय उभर कर आते हैं ?
उत्तर :– मेरी रचनाओं में मुख्यत: प्राकृतिक सौंदर्य, देशभक्ति और प्रेरणादायक विषय ही उभर कर आते हैं।

प्रश्न 3– लेखन की प्रक्रिया आपके लिए कैसी होती है?क्या आप किसी विशेष अनुशासन या समय सारिणी का पालन करती हैं?

उत्तर :– मेरी लेखन प्रक्रिया साधारण है मैं अपने साथ छोटी सी डायरी रखती हूं अचानक सुंदर सा पद्य हवा के झोंके की तरह मेरे मस्तिष्क से टकराता है मैं उसे उसी वक्त अपनी डायरी में लिखने का प्रयास करती हूं।

व्यक्तित्व और दृष्टिकोण

प्रश्न 1- एक महिला रचनाकार के रुप में आपने किन चुनौतियों का सामना किया ?

उत्तर :- एक महिला रचनाकार के रुप में मुझे किसी भी चुनौती का सामना नहीं करना पड़ा मेरे परिवार के सभी सदस्यों ने मुझे पूरा सहयोग दिया है।विद्यालय के अध्यक्ष श्री अनिल विरमानी जी , श्री अमिताव विरमानी जी , प्रबंधक (मैनेजर) डॉ एस. के. वर्मा जी और विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री अवतार सिंह रावत जी ने हमेशा साहित्यिक कार्यक्रमों में मुझे सहमति प्रदान करके मेरे हौंसलो को उड़ान दी है मैं हृदय से सभी का आभार व्यक्त करती हूँ और मैं साहित्य 24 की मासिक पत्रिका **"साहित्य संसार"** के माध्यम से अपने परिवार के सदस्यों का और अपने विद्यालय परिवार के सभी सदस्यों का धन्यवाद करती हूँ।

प्रश्न 2- क्या आपको लगता है कि आज के समय में महिला लेखन को उचित स्थान मिल रहा है ?
उत्तर :- हां बिल्कुल महिला लेखन को उचित स्थान मिल रहा है। महिलाएं लेखन के क्षेत्र में काफी सशक्त बनकर उभर रही हैं। इसके लिए मैं उन सभी साहित्यिक मंचों का आभार और धन्यवाद प्रकट करती हूं जो महिलाओं को आगे बढ़ाने में सहयोग कर रहे हैं। उनकी रचनाओं को अपने मंच के माध्यम से जन-जन तक पहुंचने में मदद कर रहे हैं।

प्रश्न 2- आपके व्यक्तित्व की कौन सी विशेषताएं आपके लेखन में परिलक्षित होती हैं ?
उत्तर :- मुझे प्रकृति से बहुत लगाव है मैं परिस्थिति के अनुसार खुद को ढाल लेती हूं और उसी से ओतप्रोत काव्य की रचना कर लेती हूं । मैं जब गंभीर होती हूं तो कविताएं भी गंभीर होती हैं ।

समकालीन संदर्भ

प्रश्न 1- वर्तमान हिंदी साहित्य में आप किस प्रकार के बदलाव देख रही हैं ?
उत्तर :- वर्तमान हिंदी साहित्य में अब सरल और आम बोलचाल की भाषा का अधिक प्रयोग किया जा रहा है जरूरी नहीं की छंद वध पंक्तियां ही काव्य का रुप लेंगी अब तुकबंदी युक्त कविताएं भी बहुत अच्छी लगती हैं।

प्रश्न 2- डिजिटल माध्यम ने आपके लेखन को किस प्रकार प्रभावित किया है ?

उत्तर :- सोशल मीडिया से नए विचारों का उद्गम होता है लोगों के अनुभव और विचारों से लेखन को नया दृष्टिकोण मिलता है सोशल मीडिया से कविता को सांझा करने से तुरंत प्रतिक्रिया मिल जाती हैं।

प्रश्न 3- क्या आप मानती हैं कि साहित्य समाज परिवर्तन का सशक्त माध्यम है ? यदि हां तो कैसे ?
उत्तर :- मैं बिल्कुल यह मानती हूं कि साहित्य समाज में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है लोगों की सोच को बदलने में कविताएं बहुत अच्छा प्रभाव डालती हैं।

महिला दिवस विशेष

प्रश्न1- आपके लिए महिला दिवस का क्या महत्व है ?
उत्तर :- मेरा मानना है कि हर दिन ही महिला दिवस है क्योंकि महिलाओं के बिना यह संसार अधूरा है।

प्रश्न 2- आज की युवा पीढ़ी की महिलाओं को आप क्या संदेश देना चाहेंगी ?
उत्तर :- आज की युवा पीढ़ी की महिलाओं को में चंद पंक्तियों से संदेश देना चाहूंगी कि :-

अपनी शक्ति पहचानोतुम
नहीं किसी की दासी तुम
क्यों सिहर कर बैठ गई हो
हो इस धरा कीशूलधारिणी तुम।“

प्रश्न3- नारी सशक्तिकरण को आप किस रूप में देखती हैं ?साहित्य इसमें क्या भूमिका निभा सकता है ?
उत्तर :- नारी सशक्तिकरण तो तब है जब उसे सब जगह सम्मान की दृष्टि से देखा जाए। समानता का अधिकार दिया जाए उनके साथ कुकृत्य ना किया जाए तब है नारी सशक्तिकरण। जहां तक इसमें साहित्य की भूमिका का सवाल है तो साहित्य के द्वारा महिलाओं के अंदर आत्मविश्वास जागृत होता है महिलाएं अपने भावों को साहित्य में ढाल कर बड़े-बड़े मंचों पर काव्य पाठ कर रही हैं यह हमारे देश के लिए गौरव का विषय है।

भविष्य की योजनाएं

प्रश्न 1- आपके आगामी साहित्य की योजनाएं क्या है?
उत्तर :- मेरी आगामी साहित्य की योजनाएं हैं नए-नए विषयों पर कविताएं लिखना अच्छे बड़े मंचों पर कविता के माध्यम से अपने भावों को जन-जन तक पहुंचाना ।

प्रश्न 2- क्या आप किसी विशेष विधा में और प्रयोग करना चाहेंगे ?
उत्तर :- हां बिल्कुल मैं समाज और देश की परिस्थितियों सेओतप्रोत और अधिक कविताएं लिखने का प्रयास करुंगी और जैसे-जैसे भाव मस्तिष्क में आएंगे उन्हें कविताओं में ढालने का प्रयास करुंगी।

प्रश्न 3- अपने पाठकों के लिए क्या कहना चाहेंगे ?
उत्तर :- अपने पाठकों को हार्दिक धन्यवाद प्रेषित करते हुए कहना चाहूंगी कि आप ऐसे ही मेरी कविताएं पढ़ते और सुनते रहें और ऐसे ही अपना स्नेह आशीर्वाद स्वरुप मुझ पर बरसाते रहें । मेरी कविताएं आपके लिए प्रेरणा स्रोत बने ऐसी ईश्वर से प्रार्थना करती हूं।

प्रश्न 4- अंत में अपने जीवन दर्शन को एक पंक्ति में व्यक्त करें ?
उत्तर :- परिश्रम रूपी नाव में सत्य के पथ पर चलना ही मेरा जीवन दर्शन है।

रचनाएं

मज़हब

इस मज़हब से उस मज़हब तक
दूरियां ही दूरियां ....
जाने कब होंगी खत्म ये
मज़हबों की दूरियां
इस मज़हब से उस मज़हब तक
दूरियां ही दूरियां....

क्या कभी हिंदू और मुस्लिम
सिख इसाई होंगे एक
या यूं ही बस खून की
होली में लिपटे जाएंगे
नफरतों की आग में
हम सब सुलगते जाएंगे।
इस सरहद से उस सरहद बस
मज़हबों की दूरियां....

आजादी के वक्त हमने
सोचा था हम एक हैं
क्या पता था कुछ ही पल में
सब खत्म हो जाएगा ।
सोने की चिड़िया का स्वप्न
फिर कहीं खो जाएगा
भेड़ियों की भीड़ में इंसां
कहीं खो जाएगा ।
इस मज़हब से उस मज़हब बस
नफरतों की दूरियां....

भारत माता

भारत माता देख रही है
देश के उन गद्दारों को
जो दीमक बनकर चाट रहे हैं
देश की उजली राहों को ।

शीश झुकाकर नमन करती हूँ
देश के पहरेदारों को जो
कफन ओढ़ कर निकल पड़े हैं
देश की आन बचाने को ।

बहुत पाल लिया अपने घर में
आस्तीन के सांपों को
चुन चुन कर अब बाहर निकालो
देश के उन मक्कारो को ।

भारत मां की बेटी हो तुम
सिसक सिसक कर मत बैठो
काली का अवतार बनो तुम
अपनी लाज बचाने को ।

उठो भाइयों जागो अब तो
नव ऊर्जा संचार करो
करो गर्जना सिंह के जैसी
देश में अलख जगाने को
कोई कपटी नजर ना आए
फिर आतंक फैलाने को ।

लक्ष्य का दीपक

क्यूं निराशाओं से डरना
क्यूं विफलताओं को गिनना

राहें कांटों से भरी हैं
चलना मुझको है संभलके
मंजिले मुझको पुकारे
लक्ष्य मुझको भेदना है ।

बाधाओं के बाद ही तो
लक्ष्य का दीपक चमकता
बीतती है जब अमावस
चाँद का तब रूप खिलता ।

फिर यह जीवन आ रहा है
फिर यह जीवन जा रहा है
फिर भी क्यूं सबकी ये चिंता
नित मुझे तड़पा रही है ।

जिंदगी की धूप तगड़ी
मैं उसी तप में खड़ी हूं
है परीक्षा सा ये जीवन
मैं इसे सुलझा रही हूं ।

एक लहर उठती रही
खामोशियां बिछती गई हैं
इस अधूरे चांद से फिर
रात यह मुरझा रही है ।

एक मुसाफिर आ रहा है
एक मुसाफिर जा रहा है
है यही सृष्टि का नियम
फिर नए सांचे में ढलना ।

साहित्य 24
Publication | Events | Studio | Digital Newspaper & Magazine | Digital | Merchandise
www.sahitya24.com +91 - 9315701112

रचनाएं

मन की धारा

देखती हूँ कनखियों से इस धरा को
फूल बरसे अब ज़माना हो गया है ।

नफरतों के आग के शोले पड़े हैं
लोग दुपके से कहीं पर खो गए हैं ।

बुलबुलों के बाग अब सूखे पड़े हैं
लोग निष्ठुर निर्दयी से हो गए हैं ।

जिंदगी की नाव धीरे चल रही है
जिम्मेदारी ढोल टांगे हंस रही है ।

मैं कभी खुद को ही अब ढूंढा करूंगी
जब मिलूंगी खुद से तब पूछा करूंगी ।

इतने दिन से तुम कहां थीं ये बताओ
खुद ही फिर उस प्रश्न का उत्तर बनूंगी ।

गीत- बचपन

बचपने को मैं अपने बुलाती रही
वो ना आया मगर उसकी याद आ गई।

बारिशों में यूं अश्क बहाती रही
अपनी कश्ती को फिर मैं बुलाती रही
वो ना आई मगर उसकी याद आ गई ।

बचपने ने कहा बचपना छोड़ दे
अपने जीवन को तू एक नया मोड़ दे
वो चला गया मुझको यूं ही छोड़ कर
मैं बुलाती रही वो ना आया मगर.....

नया सवेरा

पुरानी रूढ़िवादिता से
अब हमें निकलना होगा
हमें ही आगे बढ़कर अब
नया सवेरा बनना होगा ।

निराशाओं के बाद ही तो
आशाओं का दीप है जलता
कठिनाइयों से बिना डरे अब
नया सवेरा बनना होगा ।

आगे बहुत अंधेरा होगा
हिंसक पशुओं का पहरा होगा
हिम्मत और हौंसलों से अब
नया उजाला बनना होगा ।

मार्ग में जितनी बाधा आएं
चाहे जितनी ठोकर खाएं
असफलताओं की सीढ़ी बनाकर
आसमान को छूना होगा।

नारी शक्ति

उठा लो तलवार अब तुम
इस धरा की नींव हो तुम
क्यूं सिहर कर बैठ गई हो
हो इस धरा की शूलधारणी तुम ।

अपनी शक्ति पहचानो तुम
नहीं किसी की दासी तुम
क्यूं सिसक कर बैठ गई हो
हो इस धरा की झांसी तुम।

मासूम सी इन बच्चियों को
दरिंदगी से अब बचा लो तुम
हो अगर ममता की मूर्ति
तो काली माँ दुर्गा हो तुम ।

माँ

जिंदगी की हर जंग में
एक मां है जो कभी हमें
हारने नहीं देती....
चंचल सी मुस्कान बिखेरती
एक मां है जो कभी हमें
उदास होने नहीं देती....
हमारा रुख चाहे कितना भी बदले
एक मां है जो कभी ममता भरा
आंचल हटने नहीं देती....

· निराशाओं के बादलों की
छांव छटती जा रही
देख आशा की किरण
अब धूप मलती जा रही।

· चित्कार करती खामोशियां
विराना हर साज....
चांद भी छिपकर देखता
क्या है यह आगाज़ ....

· ख़्वाब बनकर जब किसी की
तकदीर में तुम जा बसे हो
क्या फ़र्क पड़ता है किसकी
जिंदगी से जा चुके हो.....

· तुम्हारी चाहतों के बादलों में
हम सिमट जाएं....
उठे जब धूप पानी में
पिघल कर हम भी बह जाएं....

· विभावरी नित प्रेम से
तारे सजाती है मगर
चांद तुम मगरूर से
इस झील में रहे रातभर....

· बादलों की गर्जना में
एक नया सा गीत कोई
एक घटा में फिर सिसकती
सी रही एक बूंद कोई.....

· शरद ऋतु की चांदनी
कल कल करता नीर
चांद पुकारे रात को
सर-सर बहत समीर

· सूरज ने बाहें फैलाई
भोर उठी और फिर मुस्काई
फूलों की बगिया को छूकर
मंद मंद पुरवा चली आई....

· ख्वाबों में आकर क्यूं तुमने
मेरी नींद चुराई...
चुटकी भर ही रात बस
मेरे हिस्से में आई....

· चटकारे ले रहा है सूरज
ओस की बूंदे पी पी कर
थर-थर पत्ते कांप रहे हैं
शरद ऋतु की गोद में सोकर ....

· जब भी बुलाओगे हमें तुम
हम ख़्वाब में आया करेंगे
बनकर सितारा व्योम का
तुम्हें ओट से देखा करेंगे....

· फिर किसी संभावना के
बीज बोएगा अंधेरा
रात जागेगी मगर
चहुं ओर फैलेगा का सवेरा।

· करूं क्यूं त्याग अपना
और तुम्हें क्यूं मान लूं अपना
सजा कर ख़्वाब तेरे क्यूं करूं
अपमान फिर अपना....

· फिर किसी संभावना के
बीज बोएगा अंधेरा....
रात जागेगी मगर
चहूँ और फैलेगा सवेरा...

2017 में दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा समाराधक सम्मान प्राप्त हुआ।

2014 में भारत विकास परिषद द्वारा सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

2024 में शिक्षक न्याय मंच द्वारा सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका का सम्मान प्राप्त हुआ।

आज(1-3-2020) गोवा की पूर्व राज्यपाल और सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्रीमती मृदुला सिन्हा जी के सानिध्य मे प्रसिद्ध साहित्यकारों द्वारा कविसम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमे मुझे सर्वोत्तम काव्य पाठ के लिए सम्मानित किया और ये मेरा सौभाग्य है कि इसका प्रसारण साधना चैनल पर भी होगा।

2025 में भारत विकास परिषद द्वारा सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका का सम्मान प्राप्त करते हुए।

2025 में संस्कृत शिक्षक संघ द्वारा सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका का पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

पूर्व सांसद श्री विजय गोयल जी को अपनी काव्यांजलि "भावों का संगम" भेंट करते हुए।

शिक्षक न्याय मंच द्वारा सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका का पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

साहित्यिक विकास मंच पर काव्य पाठ करते हुए।

टू मीडिया में काव्य पाठ करते हुए।

मेरी काव्यांजलि "भावों का संगम" के विमोचन पर हिंदी और संस्कृत के पूर्व सचिव श्री जीतराम भट्ट जी द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए।

साधना चैनल पर काव्य पाठ करते हुए।

BRAND AMBASSADOR

SAVI KALRA

MOTIVATIONAL SPEAKER
&
SOCIAL WORKER

WWW.GLAMEO.CO.IN

नन्हें लेखक

@999/-

- क्या आप स्कूल में हैं ?
- क्या आपकी उम्र 18 वर्ष से कम है?
- आप हिंदी में लिख लेते हैं?
- मनमोहक ग्राफिक्स के साथ अपने भावनाओं को पुस्तक का रूप दें।

- ISBN Number/ with barcode .
- Certificate.
- 3 Copies of Book.
- Printed Coffee Mug.
- Printed T- Shirt.
- Interview In Print & Digital Media.
- Delivery at your doorstep within 15 days.

9315701112 I saahitya24@gmail.comI www.sahitya24.com